

३०९

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

५३५वे१५३[३९९]

ग्रंथ नाम

मूळ स्तंभ.

विषय

म. वेदांत.

मराठी

वदाल

कवड

मूलसंबंध



उच्च

पुरीत

उच्च १००

चा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६६५ ॥ ७२ ॥

- ॥ मुल स्तोत्र व्याख्या प्रसंग ॥ ७॥ पान
- ॥ प्रथमोऽध्यायः ॥ १॥ श्लोक १६२ ॥ २०
- ॥ द्वितीयोऽध्यायः ॥ २॥ श्लोक ४० ॥ ६
- ॥ तृतीयोऽध्यायः ॥ ३॥ श्लोक ५४ ॥ ६
- ॥ चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४॥ श्लोक ११ ॥ २
- ॥ पंचमोऽध्यायः ॥ ५॥ श्लोक ११२ ॥ ११
- ॥ षष्ठोऽध्यायः ॥ ६॥ श्लोक ६० ॥ ७
- ॥ सप्तमोऽध्यायः ॥ ७॥ श्लोक ५२ ॥ ६



(2)

श्री गणेशाय नमः श्री गुरुनाथाय नमः ॥ आतां न  
मी न देव ईश्वर ॥ जोगी रजापती महो हर ॥ तो वंदी  
न ईश्वर ॥ आदी पुरुष ॥ १ ॥ वोन मो जी सदा त्रिवाः  
सो हं मुती परतवा ॥ सी वा संभु माहा देवा ॥ नम  
नमा मे ॥ २ ॥ जय जय जी गणनाथा ॥ प्रम पुरुषा  
अव्यक्ता ॥ ब्रह्मादी को सर्वथा ॥ न कले सितुं ॥ ३ ॥ तु  
नी वी कानु नी नां जनु ॥ वी श्व व्या प कु ज ग जी व नुः  
प माहा स गुरु नुः तो च्छी तु ॥ ४ ॥ दे वा तु वी न म ना नी

१॥

॥१॥

(2A)

करा ॥ पंचमुख परमेश्वरा ॥ व्यादी नाशाकर्षु  
गौरा ॥ नीरंजनरुपा ॥ ५ ॥ तुष्येवार्धांगीपावतीः  
मुगलीगंगा रूपवती ॥ तोरुगुनासिकमुती ॥ दे  
वातु ॥ धाजयाचंद्रमुर्धललहारी ॥ तोरुदशभुज  
धुजेती ॥ शोशावाहकंठी ॥ अलंकार ॥ ७ ॥ व्या  
गीवीसुतीचेउद्यलन ॥ व्याघ्रांवरचंपाचुरन ॥  
ललहारीचदन ॥ शंभुतुज ॥ ८ ॥ तुष्येदशनांगी

(3)

चतुराननु ॥ जन्म पावला बुद्धा अपनु ॥ वामा  
गी वीष्टु नारायनु ॥ जन्मला पै ॥ १५ ॥ तु बुद्धा वी  
ष्टु महेशु ॥ एक मुर्ती परमहंसु ॥ तीं ठाई जाला सी  
उं सु ॥ आदी पुरुडा ॥ १५ ॥ कवन जाने तु सी रगे ली ॥  
सप्तपाताळ पा उले गे ली ॥ वेद पुराने अमळी ॥ १२ ॥  
तां तु ज ॥ ११ ॥ एक वीं सु खगी वरी ॥ तु सामु गुठ गा  
त्री पुरारी ॥ कवन जाने तु सी शेरी ॥ देव राया ॥ १५ ॥  
असा देव ईश्वर ॥ अलं हा अपरा पर ॥ बुद्धा दीकां

२ ॥

॥ २ ॥

मुळ

॥प्रा॥१॥

संप

(3A)

व्यागोचरु ॥ लुसीयस्वरुपाचापारु ॥ नकलेकवना ॥  
 ॥१३॥ पृथ्वीयकृती ॥ शीसालेका ॥ व्याकाशलीगमुती  
 देखा ॥ तथाकवीलासनायका ॥ पुजाकैसी ॥ १४ ॥ मे  
 धमालावरुजाती ॥ तंतुजतहेगापशुपती ॥ नवलस  
 ताशंगनेशोपती ॥ पुत्रपंतुज ॥ १५ ॥ येसादेवईस्वरु ॥  
 नीलारक्षुपरमेश्वरु ॥ वृज्ञानकलेपारु ॥ ब्रह्मादीक ॥  
 ॥१६॥ साहिजनकाडती ॥ अठराअनुवादती ॥ च्या  
 हीविदवीनेती ॥ प्राठहोउनीमा ॥ १७ ॥ परीतुलसा

वी

(५)

नयसिकवना ॥ आंतीघातलीसकलहीजना ॥ जग  
जीवनारइडा न्या ॥ साहाकारीतुं ॥ १७ ॥ येसाबोवडा  
वचनी ॥ म्यातमीलाइतपायी ॥ आंताकरीतसें  
वीनवनी ॥ ओतयांसां ॥ १८ ॥ जीजीमीव्याइसाव  
डा ॥ मजमतीप्रकाइआडा ॥ मासाबोळबोवडा ॥ प ॥ १९ ॥  
रीसावातुम्ही ॥ २० ॥ तुम्हीओतेसस्यान ॥ माहाभेदीक  
वीचमन ॥ तुम्हापुढंबोळतांवचन ॥ श्रीतअसें ॥ २१ ॥  
तुम्हीजरीकपाकशाल ॥ चीतदेउनीपनीसाल ॥



(4A)

तरी मी बोल न बोल ॥ अष्टमा मी कु ॥ २२ ॥ मागुंशा  
नाम मुल स्तंभ ॥ ईश्वर पार्वती संवाद ॥ दोही नाव्य  
नुवाद ॥ परी सा वा जी ॥ २३ ॥ पार्वती हो ये पुसती ॥  
ईश्वर देव सांगती ॥ पीउ बु हांडा ची स्ठिती ॥ बोल  
ती आतां ॥ २४ ॥ म्हने वादी पुसता ॥ वा सु मागी संन  
स ॥ श्री माहा माया प्रकाश ॥ दावी लु आतां ॥ २५ ॥ पै  
ल कवी ला साचा डीरुशी ॥ पार्वती सहित त्रीपुगरी ॥  
आन दे पुसती जाली गौरी ॥ वीवा प्रती ॥ २६ ॥ क

(5)

रजोइनीकरीवीनती॥होजीदेवानीजमुती॥नीरा  
काराचीस्वीती॥सागामज॥२७॥नीराकाराचीसा  
रुबुळा॥सागाजीदेवात्रीनमना॥कैसीजालीर  
चना॥चराचरहें॥२८॥तवंमूषातीदेवकुलपाणी॥२९॥  
ॐकंगोरीचीतदेउनी॥प्रथममुलारंभापासुनीः  
सागनतुज॥३०॥नाहीपवनवानीपानी॥आ  
काडनाहीमेदनी॥चंद्रसुर्षदेकी॥नकतेहें॥३१॥  
नाहीस्वर्गमेकवीस॥जन्मनाहीसप्तपातालास॥

मेघमालानक्षत्रांशु ॥ ठावोचीनाही ॥ ३१ ॥ नाही अड  
 डाकी तीर्थे ॥ नकृती पंचम माशुते ॥ अवघे शुन्य होतं  
 नीराकार ॥ ३२ ॥ नाही सप्तसमुद्र ॥ गीरी पर्वतमहिद्र ॥  
 नकृते बुद्धा वीष्णु रुद्र ॥ ती न्ही देव ॥ ३३ ॥ नाही मन  
 बुद्धी बोकार ॥ चित्तचे तन्पनीराकार ॥ सप्तद्वीपें  
 मरुमांदार ॥ तेही नकृती ॥ ३४ ॥ नाही नादनांवीदः  
 कलाजोती वनकेद ॥ नकृती वाचाडाद ॥ होतं नीरस  
 नी ॥ ३५ ॥ नाही आपते जपृथ्वी ॥ वायो नाप्राकांशु

(6)

ओ श्री ॥ तै नी रा कार बुद्धी ॥ वर्तित व्यसे ॥ ३६ ॥ न कृती  
 चतुर रखाणी ॥ सकल बुद्धी होउनी ॥ आसु पुरान  
 वेदवाणी ॥ नी रा कार व्यसे ॥ ३७ ॥ यैसा औघाची  
 नी रा कार ॥ सामा जी मे क व्य का व ॥ मज पा हा तां सा कार ॥  
 श्री सु व न हे ॥ ३८ ॥ मी तो ची नी रा कार ॥ सु न्य नी ठा रं ॥ ५ ॥  
 म प र मे स्वरु ॥ मज प र ता शोरु ॥ व्य ती क ना ही ॥ ३९ ॥  
 सु न्य तै ची सा कार लें ॥ स्व ये बू भू ची वी स्ता र लें ॥ मा रं  
 स्वरु प आ लें ॥ यै क वी स दे वी ॥ ४० ॥ त वं भू न त व्य से गी

५ ॥

कार ॥

५ ॥

(६A)

रीजा ॥ नी वंचना करुनी बोजा ॥ अहो जी देवा सं  
भु राजा ॥ सांगा स्वामी ॥ ४५ ॥ पांचा तहाची रचनाः  
जाली जग जीवना ॥ कवन तत्र कवना ॥ पासुनी  
जाली ॥ ४६ ॥ मग ईस्वर देव बोलती ॥ परी ये सीगी  
रीजे वाक्ती ॥ पंच भुलाची वीहती सांगेन व्यातां ॥  
॥ ४७ ॥ प्रथम सुन्य बुद्धा पासुनी ॥ व्याकाश जालें तेशु  
नी ॥ ते सर्व जना व्योनी ॥ होउनी ठेले ॥ ४८ ॥ सुन्य  
आले गगनातें ॥ पवन आले तें जातें ॥ जानी जें सु ॥ ४९ ॥

(7)

ते ज व्यालं आ पा तें ॥ आप व्यालं पृथ्वी तें ॥ येसी पक्षी पं  
च भु तें ॥ जन्म ली पा ही ॥ ४४ ॥ येसी पंच त वृं नी प ज लीः  
ये क ये कां तें प्र स व ली ॥ या पा सु न जा ली भु त सु छी ॥  
॥ ४५ ॥ आ धी पंच पु ती क व ची लें ॥ म ग हे च न च र जा  
लें ॥ प्रेम त व वी स्ता री लें ॥ सं वी ठां री ॥ ४६ ॥ प्रेम त व ॥ ४७ ॥  
जान ॥ मा स्ने नी ज रु प ज्ञान ॥ तें पां चा चें जन्म स्थ  
न ॥ प्रथ म ता तें ॥ ४८ ॥ तें पां चा त वा चें मु ल ॥ तें प्रेम  
त व के व ल ॥ त या पा सु नी स क ल ॥ त वें जा ली ॥ ५० ॥

त्वं हे मवं ता चीकु मरी ॥ पार्वती वी न ती करी ॥  
 मूने ई स्वरा अवधारी ॥ पृष्ठं मा प्रा ॥ ५१ ॥ सां  
 च्या त वा चै उ त्त न ॥ तु म्ही सा गी त ले सु उ द्द ष ॥  
 आ तां पां च्या त वा चै प च वी स गु न ॥ सां गी जे जी ॥ ५२ ॥  
 ये क ये का त वा च्या वी चारु ॥ आ म्हा सां गा जी वा  
 गरु ॥ तो दा ख वा जी प द रं प द रु ॥ उ क लु नी माः  
 ॥ ५३ ॥ म ग मू न ती लें ज गं ना थें ॥ गो री प री ये स्ति  
 ये क ची तें ॥ ये थी ची वी वं च ना तु तें ॥ सां गी जे ॥ ५४ ॥

(४)

ये कये का पासुनी जाले पांच पांच गुण ॥ ये से पं  
चवीस मीले नी ॥ इरी रहें ॥ ५५ ॥ या इरी रसीत  
री ॥ गुनवती परोपरी ॥ ते सांगले ती व्याव  
घारी ॥ आईक गीरी जे ॥ ५६ ॥ आस्ती ताडी मां  
स ॥ वचा आनी के ॥ हे पांच ही गुन पनी ये सी ॥ ५७ ॥  
पृथ्वी तवाचे ॥ ५८ ॥ काल शुक्ली त श्रो वीत ॥ मुत्र  
श्लेष्म वी रव्यांत ॥ हे पांच ही गुन वी श्रांत ॥ व्या  
पतवाचे ॥ ५९ ॥ नीद्रा ताहान सुक ॥ आलस पांच  
वं सुख ॥ हे पांच गुण देख ॥ ते ज तवाचे ॥ ६० ॥

॥ ५७ ॥



(४५)

चलनचलनप्राक्रोचन॥ पसरननीरोधन॥ हेपां  
चहीगुनजान॥ वाघोतत्ताचें॥ ६०॥ लज्जामोहो  
भये॥ रागडातीहोय॥ हेपांचहीगुनपाहे॥  
व्याकाडातवाचें॥ ६१॥ चैसापंचतत्ताचावी  
चारु॥ पंचवीसगुनाचाप्रकारु॥ सांगीतल  
नीधीरु॥ गीरजेदेवो॥ ६२॥ तवंआनीस्वप्  
संपावती॥ देवाववधीतवंचीती॥ माचिफि  
डावीभुंती॥ प्राननाथा॥ ६३॥ मगमृणतीदेवमहेश॥

(१)

देवी अवधीत वंदे तीस ॥ वृजसांगी तली ती  
स ॥ आर्षी कनीक साहासती ॥ ध्यायाव  
री मृ नती ले उमने ॥ देवासाहात वं तं कवने ॥  
ना उले नी शोपने ॥ छपा बु धी ॥ ध्या ॥ मग मृ नती  
आना ही सी धा ॥ डा सु स्प डी रसरुप गध ॥ हं पा  
चत वृ प्र सी धा ॥ जाने देवी ॥ ध्या ॥ डा द्व गु न धा  
को डा चा ॥ स्प डी गु न वा यो चा ॥ रुप गु न ते जा  
चा ॥ जानी जे सु ॥ ध्या ॥ रस गु न धा पा चा ॥ गंध

॥८॥

मुल

॥५॥१॥

स्तं११

(१५)

गुनपृथ्वीचा ॥ येसा पंचतहाचा ॥ वीस्तारदेवीः  
 ॥६॥ गीरजे पांचतीस ॥ असी जाली पंचतीसः  
 साहावे तहा पडी येस ॥ आगा चरते ॥ ६॥ प्रेमत  
 वृद्धे तीसावे जाना ॥ अवधीयांत वृचमुल  
 स्थान ॥ ते श्रीगुरु फपकीया ॥ नेनी जेतें ॥ ७० ॥  
 असा तीसांत हाचामे लु ॥ हाफी उरची मला  
 गोला ॥ तवं हे मवंताची बाला ॥ आनी कपुसे ॥  
 ॥ ७० ॥ म्हणे जंजु उमार मनु ॥ आतु वीधी आई

(१०)

केचीतदेउनु॥ पार्वतीकायप्रष्टु॥ करीती  
जाली॥ ७४॥ तवंव्यादीज्ञानीवंबीका॥ पुसेक  
वीमनायका॥ हेवीडीचीरवनुका॥ सांगासा  
मी॥ ७५॥ व्याहोजीदेवाचद्रमौली॥ नुसर्विया  
पकुसकली॥ मजसांगरागनीवोली॥ हफ  
करनी॥ ७६॥ मगकृपातीत्रीपुरारी॥ देवीये  
काग्रमनकरी॥ पीडीचीवीपुतीववधारी॥  
सांगननुज॥ ७७॥ अस्त्रीपुरुडोमीलती॥ आ

॥१॥

॥१॥



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com